12

विकासोचित ईसीसीई पाठ्यचर्या की योजना

बच्चे जन्म से ही अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों के साथ अपने वातावरण से सम्बन्ध बनाने का प्रयास प्रारम्भ कर देते हैं। स्पर्श करने पर बच्चे अपनी आँखें फैलाते हैं, नाक फुलाते हैं, अपने पैरों को पीछे खींचते हैं और लुकाछिपी का खेल खेलने पर खिलखिलाते हैं। मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों का मानना है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था (जन्म से आठ वर्ष तक की आयु) बच्चों के शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषायी तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास की दृष्टि से जीवन की बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में, योग्यताओं की वृद्धि आश्चर्यजनक रूप से तेजी से होती है जिससे प्रारंभिक अधिगम श्रेष्ठ अनुपात में आगे बढ़ता है। यही वह समय है जब बच्चों को निजी देखभाल, उद्दीपक/सामर्थ्यपूर्ण, योग्य परिवेश, और गुणवत्तापरक सीखने के अनुभवों की आवश्यकता होती है। अगर बच्चों को इस अवस्था के दौरान, यह सभी नहीं मिलता तो उनके विकास के अवसर विपरीत ढंग से कम हो जाते हैं। प्रथम 1000 दिनों के महत्व को सभी ने स्वीकारा है कि ये जीवन पर्यन्त सीखने हेतु निर्णायक हैं। विशेषत: पूर्व-विद्यालयी स्तर पर यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है कि आवश्यक परिपक्वता तथा प्रयोगात्मक अनुभव बच्चों को प्रदान किए जाए जो अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्हें सीखने एवं बढ़ने में मदद करें। इसके लिए आवश्यक है कि हम बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए आयु उपयुक्त विकासात्मक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना बनाएँ।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- आयु और विकासात्मक उपयुक्त ईसीसीई कार्यक्रम के अर्थ और महत्त्व की व्याख्या करते हैं;
- ईसीसीई पाठ्यचर्या के परिप्रेक्ष्य में उसकी ज़रूरत एवं महत्त्व पर चर्चा करते हैं;
- ईसीसीई योजना के गुणात्मक सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं;

टिप्पणी

- दीर्घावधि और अल्पावधि योजना की आवश्यकता की तर्कसंगत व्याख्या करते हैं;
- छोटे बच्चों के लिए थीम पर आधारित संतुलित ईसीसीई कार्यक्रम की योजना का नमूना तैयार करते हैं;
- विकास के विभिन्न आयामों तथा क्रियाकलापों द्वारा सीखने की चर्चा व इनमें अन्तर्संबंध स्थापित करते हैं; और
- विविधता को स्वीकारते हुए समावेशी कार्यक्रम की योजना बनाते हैं।

12.1 आयु तथा विकासोचित ईसीसीई कार्यक्रम का अर्थ और महत्व

उच्च कोटि के ईसीसीई कार्यक्रम में योजना एक मुख्य आधार है। छोटे बच्चों के लिए योजना बनाने का अर्थ है–''आगे की सोचना''। पाठ्यक्रम के लचीला होने की आवश्यकता है। यद्यपि अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक को योजना बनाने की ज़रूरत होती है ताकि वह बच्चों को व्यवस्थित रूप में आयु और विकासात्मक रूप से उपयुक्त अनुभव एवं गतिविधियाँ प्रदान कर सकें। एक उच्च कोटि का ईसीसीई कार्यक्रम या पाठ्यचर्या पाँच पहलुओं जैसे–शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषायी, सामाजिक-संवेगात्मक विकास और कला एवं सौंदर्यात्मकता पर आधारित विभिन्न गतिविधियों तथा अनुभवों के द्वारा एक संतुलित दैनिक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

जब हम बच्चों की आयु तथा विकासोचित पाठ्यचर्या की बात करते हैं तो हमें अपने दिमाग में बच्चों की आयु के साथ-साथ उनके विकासात्मक स्तर को ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक बच्ची शारीरिक रूप से तो विकसित है परंतु उसकी भाषा का विकास नहीं हुआ है या एक बच्चा बहुत ही सचेत है और उसके साथ उसकी समझने की शक्ति बहुत ही तीव्र है परंतु उसे चलने में परेशानी है। इसलिए, बच्चों की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक को योजना बनाते समय बच्चों की आयु, ज़रूरतों, रुचियों और विकास को ध्यान में रखना चाहिए। यह हमारे छोटे बच्चों को तनाव/दबावमुक्त परिवेश एवं उद्दीपनयुक्त वातावरण में फलने-फूलने तथा विकसित होने में मदद करेगा, जहाँ कार्यक्रमों में लचीलापन सभी बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

12.2 ईसीसीई पाठ्यचर्या की प्रासंगिकता की आवश्यकता एवं महत्व

जब आप छोटे बच्चों के कार्यक्रम की योजना बना रहे हों, आपको यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि आयु उपयुक्त और विकासोचित होने के अतिरिक्त, कार्यक्रम बच्चों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के संदर्भों से जुड़े होने चाहिए। यदि भाषा या सामग्री या कहानी या गीत सभी अपरिचित हैं तो कक्षाकक्ष की गतिविधियों में बच्चों की रुचि को बनाये रखना चुनौतीपूर्ण होगा। स्थानीय एवं सरल भाषा बच्चों को आकर्षित करती है। जिस भाषा का आप प्रयोग कर रहे हैं वह भी सरल होनी चाहिए। संप्रत्यय वास्तविक जीवन के मूर्त अनुभवों से संबंधित होकर

टिप्पणी

धीरे-धीरे अमूर्त विचारों की तरफ बढ़ने चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी ग्रामीण क्षेत्र में हैं और आप 'जानवर' थीम पर चर्चा कर रहे हैं, तो पहले परिचित जानवरों के बारे में बात करें और धीरे-धीरे अपरिचित जानवरों के चित्र दिखाएँ। इसे संदर्भिक अधिगम कहा जाता है। इसी प्रकार अगर आप बात कर रहे हैं 'पेड़-पौधों' की तो पहले सामान्य एवं परिचित पौध ों की बात करें जो बच्चों के वातावरण में उपलब्ध हों। बच्चों से उन सब्जियों की बात करें जिनसे वे परिचित हैं और जिन्हें वे खाते हैं, ना कि स्ट्राबेरी या चेरी के बारे में जिन्हें उन्होंने नहीं देखा है। यह सुनिश्चित करता है कि अधिगम एवं शिक्षण अधिक अर्थपूर्ण एवं आनंददायी होगा। स्थानीय त्योहारों, राष्ट्रीय दिवसों, स्थानीय भोजन दिवसों के आयोजन से बच्चे सरलतापूर्वक विविधता को समझ लेंगे। यह ईसीसीई कार्यक्रम और थीम आधारित शिक्षण को अधिक रोचक और अधिक संदर्शिक बना देगा।

भारत में दो प्रकार की विविधता देखी जा सकती है। पहली प्रकार की विविधता वहाँ देखने को मिलती है जहाँ पर लोग एक अलग तरह की सामाजिक, भौतिक और सांस्कृतिक परिस्थिति में रहकर विशेष प्रकार का समूह बनाते हैं। दूसरी परिस्थिति में एक ही कक्षा में विभिन्न परिवेश के बच्चे होते हैं। दोनों ही परिस्थितियों में कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो स्वयं को बहुल संस्कृति का हिस्सा मान लेते हैं यद्यपि उनकी अपनी सामाजिक पहचान वैसी नहीं होती। एक ही तरह की पाठ्यचर्या दोनों ही समूहों के बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं होती। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे परिवहन के साधनों के बारे में शहरी क्षेत्र के बच्चों से अलग उत्तर देंगे। शहरी क्षेत्र के गरीब बच्चे को केवल धार्मिक स्थलों से ही भोजन मिलने की संभावना रहती है। ऐसे बच्चे की समझ अलग तरह की होगी। ग्रामीण क्षेत्र का बच्चा कह सकता है कि ''मैं जहाँ पुजारी से मिलता हूँ मंदिर वहीं है'' जबकि शहरी क्षेत्र का एक गरीब बच्चा यह कह सकता है कि 'जहाँ से मैं भोजन प्राप्त करता हूँ, मंदिर वही है'।

नियोजन के मुख्य सिद्धान्तों में से एक है कि बच्चों को सामाजिक वास्तविकताओं को समझा जाए तथा उसके अनुरूप कार्य किया जाए। पाठ्यचर्या या विषयवस्तु से किसी विशिष्ट दिशा हेतु उत्तरों की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। वास्तव में बच्चों की समझ में इतनी विविधता होती है, कि इन विविधताओं को सीखने के अवसरों के रूप से उपयोग किया जा सकता है। बच्चों के लिए पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय मुख्य सिद्धान्त यह है कि दोनों ही तरह के बच्चों के लिए उपयुक्त पाठ्यचर्या की रचना की जाए। वस्तुत: बच्चों की समझ में इतनी विविधता होती है कि उनमें संभावनाओं के बीज बोए जा सकते हैं।

12.2.1 बहुसांस्कृतिक भारतीय समाज

भारत एक बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषी राष्ट्र है। इसलिए हमें अपनी सोच में बदलाव लाना होगा कि जब बच्चे प्रारंभिक बाल्यावस्था स्तर पर हों तो हमें उनके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे जब एक प्री-स्कूल में प्रवेश लेते हैं तो वे एक सामाजिक पहचान पाते हैं। बच्चों के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़े संदर्भों को पाठ्यक्रम में कई तरीकों से शामिल किया जा सकता है। खान-पान की आदतें, त्योंहारों का मनाना, कपड़े रीति-रिवाज एवं परंपराएँ स्कूल के प्रति बच्चों के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा की भाषा को न समझने वाला बच्चा अपने आप को अलग-थलग महसूस करेगा या चावल खाने वाले परिवार का बच्चा रोटी खाने में कठिनाई महसूस करेगा या अपरिचित

टिप्पणी

त्यौहारों को मनाने में सकुचायेगा। अनेक विविधताओं एवं समावेशी माहौल न होने के कारण बच्चे को सामंजस्य करने तथा सीखने में कठिनाई हो सकती है तथा विविध पृष्ठभूमि के कारण विद्यालयी अधिगम प्रतिफल भी प्रभावित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, थीम 'हमारा पर्यावरण' के लिए प्रत्येक बच्चा वस्तुओं के नाम अपनी भाषा में अलग-अलग बतायेगा। समुद्र के किनारे रहने वाले बच्चे समुद्री शंख, सीपी एवं मछली बतायेंगे जबकि जंगल के नजदीक रहने वाले बच्चे घोंसला तथा मधुमक्खी का छत्ता बतायेंगे। दूसरे बच्चों के साथ सहभागिता करने तथा सुनने के अवसर देने से बच्चे स्वतंत्र अभिव्यक्ति करते हैं तथा उन क्रियाकलापों में सहभागिता करते हैं।

इसी प्रकार, जब हम ईसीसीई कार्यक्रम की योजना बनाएँ तो हमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभिविन्यास के बारे में सुनिश्चित होना चाहिए। प्रासंगिक परिप्रेक्ष्य में विषयवस्तु को स्थानीय वातावरण से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। सामान्यत:, विचार, तथ्य और घटना को संदर्भिक बनाने हेतु स्थानीय परिवेश से जोड़ा जाना चाहिए जिससे वह अपना सही एवं पूर्ण अर्थ प्राप्त करें। यह एक कार्य या प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं को संदर्भ में रखा जाता है और उस स्थिति और स्थान के आधार पर सूचना का अर्थ निकाला जाता है, जिसमें वह सूचना पाई गई थी। अनुसंधानों से पता चला है कि प्रासंगिक निर्देश बेहतर सीखने की ओर अग्रसर करते हैं। संक्षेप में, बच्चों का प्रारंभिक अधिगम अपने परिवेश से शुरू होता है, जिसे वे अपने आसपास देखते हैं और उनसे परिचित होते हैं। धीरे-धीरे बच्चे अपने परिवेश एवं संदर्भों के बारे में सवाल करते हैं तथा तथ्यों के बीच संबंधों की खोजबीन करते हैं। इस प्रकार के संदर्भित अनुभव उनको रुचि जाग्रत करने, विद्यालय के लिए प्रेरित करने तथा सफलता का अनुभव कराने एवं उपलब्धियों को हासिल करने में सहायक होते हैं।

पाठगत प्रश्न 12.1

खाली स्थान भरिए–

(क) ..... पाठ्यचर्या में थीम को स्थानीय वातावरण से जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

(ख) भारत एक ..... तथा बहुभाषी राष्ट्र है।

(ग) विकासोचित ईसीसीई कार्यक्रम बच्चों के ..... एवं ..... स्तर को ध्यान में रखता है।

(घ) एक ईसीसीई कार्यक्रम ..... होना चाहिए, जिसे नये ..... के अनुसार बदला जा सके।

(ङ) अनेक विविधताओं के कारण बच्चों को उसके समायोजन एवं सीखने में कठिनाई आती है क्योंकि उन सभी की ..... भिन्न हैं।

टिप्पणी

12.3 गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई योजना के सिद्धांत

एक उच्च कोटि का ईसीसीई कार्यक्रम बच्चों को समग्र विकास के उपयुक्त अवसर सुनिश्चित करने में मदद करता है। अत: ईसीसीई कार्यक्रम बनाते समय बच्चों के विकास तथा प्रासंगिक जरूरतों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम या ईसीसीई पाठ्यचर्या में विविध प्रकार से सीखने के अवसर के लिए प्रेरणापूर्ण वातावरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विकासात्मक विशेषताओं के अनुसार, सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित और योग्य होते हैं। छोटे बच्चे सीखते हैं जब उन्हें निम्नलिखित अवसर मिलते हैं–

- खेल
- अवलोकन एवं अभिव्यक्ति
- परिचित एवं नये अनुभव
- सहभागिता, संलग्नता तथा संप्रेषण
- प्रयोग एवं खोजबीन
- प्रश्न पूछना
- अनुकरण, अभिनय एवं प्रदर्शन
- शारीरिक और संवेगात्मक रूप से सुरक्षा महसूस करना

ईसीसीई के उद्देश्यों तथा एक प्री-स्कूल बच्चे की विकासात्मक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, MWCD ने अपनी पाठ्यचर्या रूपरेखा (2013) में ***कार्यक्रम नियोजन*** *के निम्नलिखित सिद्धान्तों की चर्चा की है:*

- *गतिविधियाँ* ***आयु तथा विकासोचित*** *होनी चाहिए।*
- ***वे गतिविधियाँ जो सभी पहलुओं का पोषण करती हैं, उनकी योजना उपयुक्त रूप से बनाई जानी चाहिए।***
- ***बच्चों की ध्यानावधि 15-20 मिनट होती है;*** *अत: किसी भी गतिविधि की अवधि 20 मिनट होनी चाहिए। किसी भी गतिविधि को प्रारंभ करने एवं समाप्त करने के लिए अतिरिक्त समय दिया जाना चाहिए। कार्यक्रम में ज़रूरत के अनुसार फेरबदल/परिवर्तन हेतु लचीलापन होना चाहिए।*
- *संरचित और असंरचित गतिविधियों में* ***संतुलन*** *होना चाहिए; जैसे–सक्रिय एवं शांत, आंतरिक एवं बाह्य, स्वनिर्देशित और वयस्कों द्वारा निर्देशित अधिगम के अवसर, व्यक्तिगत, छोटे समूह एवं वृहद समूह के क्रियाकलाप।*
- *अधिगम अनुभव तथा गतिविधियाँ* ***सरल से जटिल*** *की ओर अग्रसर होनी चाहिए।*
- ***बच्चे के परिवेश से संबंधित*** *तथा बच्चों के लिए चुनौतीपूर्ण तथा आनंददायी, व्यक्तिगत तथा सामूहिक अनुभवों की विस्तृत शृंखला नियोजित की जानी चाहिए।*

टिप्पणी

- ***दिनचर्या*** *बच्चों में सुरक्षा की भावना को पोषित करती है अत: रोज के कार्यक्रम निश्चित दिनचर्या के अनुसार होने चाहिए।*
- *ईसीसीई कार्यक्रम कभी भी जटिल नहीं होने चाहिए। इन्हें* ***लचीला*** *होना चाहिए।*
- *प्री-स्कूल कार्यक्रम की अवधि* ***3 से 4 घंटे*** *होनी चाहिए। इस कार्यक्रम में दिन में कुछ समय विश्राम के लिए दिया जाना चाहिए। अगर कार्यक्रम की अवधि लंबी या पूरे दिन की है, तो झपकी के लिए समय सुनिश्चित किया जाना चाहिए।*
- *अधिगम के अवसर* ***आपस में जुड़े होने चाहिए, जो विकासात्मक पहलुओं के अधिगम अनुभवों को सार्थक ढंग से जोड़ते हुए*** *तथा बच्चे के वास्तविक जीवन के प्रसंगों पर प्रभाव डालते हुए होने चाहिए।*
- *बच्चे की शिक्षण की भाषा* ***मातृ-भाषा*** *होनी चाहिए। उनकी भाषा को संवेदनशील रूप से बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए और विद्यालयी तत्परता के लिए विद्यालय में बोली जाने वाली भाषा धीरे-धीरे प्रयोग में लानी चाहिए।*
- *पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्य* ***कक्षा की प्रक्रिया और बच्चों के आकलन*** *को निर्देशित करते हुए होने चाहिए। पाठ्यचर्या को इस प्रकार क्रियान्वित किया जाना चाहिए कि वह बच्चे के पारिवारिक मूल्यों, विश्वास तथा अनुभवों के अनुरूप हो।*
- *कार्यक्रम में* ***खोज तथा अन्वेषण के और प्रयोगात्मक अधिगम के अवसर*** *शामिल होने चाहिए तथा यह वस्तुओं एवं लोगों की सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए।*

पाठगत प्रश्न 12.2

खाली स्थान भरिए–

(क) एक उच्च कोटि का ईसीसीई कार्यक्रम बच्चों के ..... विकास के अवसर सुनिश्चित करने में मदद करता है।

(ख) ईसीसीई कार्यक्रम बच्चों को सीखने के लिए ..... करने और प्रयोगात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करता है।

(ग) अधिगम के अवसर ..... होने चाहिए जो विकासात्मक पहलुओं के अधिगम अवसरों को सार्थक ढंग से जोड़े।

(घ) गतिविधियों की योजना आयु और ..... के अनुरूप होनी चाहिए।

(ङ) ईसीसीई कार्यक्रम में दिनचर्या बच्चों में ..... की भावना को पोषित करती है।

12.4 ईसीसीई कार्यक्रम की योजना एवं रूपरेखा

मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक पक्ष में योजना बहुत महत्वपूर्ण है। बाल विकास की स्थिति में

योजना का अभाव शिक्षण-अधिगम की पूरी प्रक्रिया को अव्यवस्थित कर देता है, परिणामस्वरूप अभीष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहता है। ईसीसीई पाठ्यचर्या में बच्चों के भाषायी, संज्ञानात्मक, शारीरिक, और सामाजिक-संवेगात्मक विकास के लिए गतिविधियों एवं अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए।

योजनाएँ मुख्यत: तीन विभिन्न समय-मापक्रम में आयोजित की जाती हैं, जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई और एक-दूसरे का अनुसरण करती हैं। वे इस प्रकार हैं–

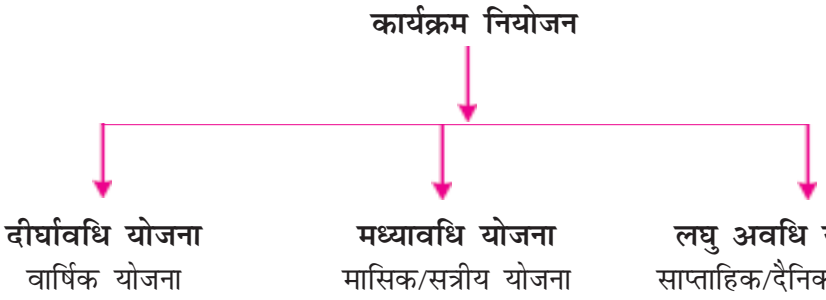

विस्तृत रूप से योजना दो प्रकार की होती है जैसे दीर्घावधि योजना तथा लघु अवधि योजना। मध्यावधि योजना; दीर्घावधि योजना का ही एक भाग है।

12.4.1 दीर्घावधि योजना का अर्थ है पूरे वर्ष की योजना की रूपरेखा तैयार करना। प्रत्येक शैक्षिक वर्ष के प्रारंभ में यह निश्चित कर लिया जाता है कि अगले बारह महीनों में क्या और कैसे पढ़ाना है। इस योजना में शामिल हैं:

- सीखने के अनुभव और पाठ्यचर्या जैसे-बच्चे अपने विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में क्या सीखेंगे
- कौशलों तथा संप्रत्ययों की पहचान
- प्रयोग की जाने वाली शिक्षण पद्धति या प्रणाली
- पूरे वर्ष के लिए थीम का चुनाव
- चुने गए थीम के क्रियाकलापों की समय-सारणी या कैलेण्डर विकसित करना
- संसाधन के रूप में खेल उपकरण तथा शिक्षण अधिगम सामग्री
- बच्चों के अधिगम अनुभवों को जाँचने के लिए आकलन पद्धति
- विभिन्न खर्चों, गतिविधियों, घटनाओं, टूट-फूट तथा मरम्मत एवं रखरखाव के लिए बजट बनाना और राशि निर्धारित करना।

मध्यावधि योजना का अर्थ है मासिक एवं सत्र अवधि की योजना। दीर्घावधि योजना के बाद मासिक योजना बनाई जाती है जिसमें यह निश्चित किया जाता है कि प्रत्येक माह में कौन-सी थीम तथा संप्रत्यय को पढ़ाया जाएगा तथा शिक्षण रणनीतियों और छोटे बच्चों के सीखने के अनुभवों का सतत आकलन किस प्रकार करेंगे। मासिक योजना, शिक्षक को अपनी शिक्षण पद्धति को रूपांतरित कर कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार करने के अवसर प्रदान करती है।

टिप्पणी

बच्चों की प्रगति को ध्यान में रखने के उद्देश्य से मासिक योजना मध्यावधि योजना में योगदान कर सकती है। सत्रीय योजना, थीम एवं अवधारणाओं की पहचान पर आधारित होती है जोकि विविध आयामों, जैसे मानसिक कार्य को बढ़ावा, सम्प्रेषण कौशल में वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक दक्षता को बढ़ाने में खोजबीन एवं विकास को बढ़ावा देती है। थीम बच्चों को आकर्षित एवं भागीदार बनाती है जिससे कि वे अपने कौशलों एवं समझ का प्रदर्शन कर सकें। बच्चों की प्रगति को रिकार्ड किया जा सकता है और उनके माता-पिता के साथ इसे साझा किया जा सकता है। संक्षेप में यह योजना किसी एक अवधि/सत्र या एक माह पर आधारित होती है।

वार्षिक योजना से ही मासिक योजना तैयार की जाती है जो कि एक निश्चित समय के लिए लक्ष्य को निर्धारित करती है तथा गतिविधियों को एक सामान्य रूपरेखा प्रदान करती है। मध्यावधि योजना बच्चों के साथ कार्य करने का वास्तविक काल होता है जिसमें विषयवस्तु के बारे में बच्चों की सहभागिता एवं अनुक्रिया की सतत समीक्षा की जाती है। बच्चों की संलग्नता एवं लाभ को ध्यान में रखकर कार्य करने के तरीके एवं विषयवस्तु में संशोधन किया जा सकता है।

12.4.2 लघु अवधि योजना का अर्थ है साप्ताहिक तथा दैनिक योजना। यह दीर्घावधि तथा मध्यावधि योजना से अधिक विषयपरक होती है। यह योजना प्रत्येक बच्चे की ज़रूरत और रुचि को ध्यान में रखकर बनाई जा सकती है। बच्चे जो कहना एवं करना चाहते हैं, उसे सुनना तथा उन्हें दैनिक योजना की प्रक्रिया में शामिल करना बच्चों को योजना की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ता है। लघु अवधि योजना में आप ऐसे बच्चों, जिन्हें अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता है, पर ध्यान केंद्रित कर सकते हो। लघु अवधि योजना बनाते समय आप यह निश्चित कर सकते हो कि:

- किन संसाधनों की जरूरत है?
- खेल परिवेश में बदलाव कर उसे अनुकूलित कैसे बनाया जा सकता है?
- दिन में कौन-सी गतिविधियाँ किस समय होंगी?
- कौन कहाँ होगा तथा उसकी प्रमुख भूमिका क्या होंगी?
- अधिगम का आकलन किस प्रकार किया जाएगा?

बहरहाल, यह आवश्यक है कि समूह के लिए योजना बनाते समय प्रत्येक बच्चे की रुचियों को शामिल किया जाए। आइए, साप्ताहिक एवं दैनिक कार्यक्रमों के संदर्भ में लघु अवधि योजना को और सही ढंग से समझा जाए।

साप्ताहिक योजना: यह लघु अवधि योजना का ही एक भाग है। जैसे थीम पर आधारित शिक्षण एक सप्ताह या और लंबे समय के लिए होता है अत: शिक्षक पहले से ही योजना बना लेता है कि सप्ताह के दिनों में क्या-क्या करना है और उन उप-थीमों पर आधारित विभिन्न दैनिक गतिविधियों को तय करता है। ऐसा देखा गया है कि विषयवस्तु पर आधारित पद्धति, सीखने को न केवल आसान और रुचिकर बनाती है बल्कि बच्चे को मूल संप्रत्यय की बेहतर

टिप्पणी

समझ भी प्रदान करती है। आइए, साप्ताहिक कार्यक्रम विकसित करने के लिए आवश्यक चरणों को समझें:

- सप्ताह के लिए थीम का चुनाव।
- थीम पर आधारित गतिविधियों की सूची बनाना।
- क्रियाकलापों की दैनिक योजना को निश्चित करना कि पहले दिन क्या कराया जाएगा, और दूसरे दिन क्या, आदि।
- प्रत्येक गतिविधि के लक्ष्य निश्चित करना।
- प्रत्येक गतिविधि के आयोजन के लिए आवश्यक सामग्री को तैयार करना।
- कक्षा के परिवेश को चुनी गई विषयवस्तु तथा गतिविधि के अनुसार आयोजित एवं व्यवस्थित करना।

दैनिक योजना/कार्यक्रम : यह योजना प्राय: शिक्षक के द्वारा बनाई जाती है ताकि वे दैनिक कार्यक्रमों के क्रमबद्ध निर्देश प्रदान कर सकें। दैनिक योजना में शामिल है:

- बच्चों के लिए कक्षा के अंदर तथा बाहर कराई जाने वाली विविध प्रकार की गतिविधियाँ
- शिक्षक बच्चों के लिए संसाधनों को व्यवस्थित करना
- शिक्षक जिस पद्धति से सिखाना चाहता है उसके अनुरूप प्रबंध करना
- विभिन्न गतिविधियों को दिया गया समय

दैनिक योजना में निम्नलिखित में संतुलन दिखाई देना चाहिए:

- सक्रिय एवं शांत गतिविधियाँ
- बच्चों द्वारा तथा शिक्षक द्वारा प्रारंभ की गई गतिविधियाँ
- आंतरिक तथा बाह्य गतिविधियाँ
- व्यक्तिगत, छोटे समूह एवं बड़े समूह की गतिविधियाँ
- मुक्त तथा निर्देशित खेल गतिविधियाँ

वार्षिक योजना द्वारा प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य

पूरे वर्ष सीखने की योजना बनाने के उद्देश्य तथा उन्हें प्राप्त करने के चरण स्पष्ट होने चाहिए। नीचे कुछ उद्देश्यों की सूची दी जा रही है जिन्हें प्राप्त करने की आशा की जाती है:

- बच्चों का भरोसा तथा आत्मविश्वास जीतना
- बच्चों में अच्छी आदतों का विकास करना
- बच्चों की निजी सुरक्षा को सुनिश्चित करना

टिप्पणी

- बच्चों की सूक्ष्म तथा स्थूल माँसपेशियों का विकास करना
- भाषायी कौशल का विकास
- सामाजिक कौशल का विकास
- संख्या, समय, रंग, आकार आदि संप्रत्ययों का विकास
- आत्म-निर्भरता का विकास
- स्व तथा अपने परिवेश की समझ
- सृजनात्मकता तथा सौंदर्यात्मक बोध का विकास

12.5 विषयवस्तु (थीम) आधारित ईसीसीई कार्यक्रम

कार्यक्रम तैयार करने की योजना के सिद्धांतों को आप समझ चुके हैं। आइए, अब विषय आधारित योजना बनाना सीखते हैं–

विषयवस्तु (थीम) आधारित योजना

ईसीसीई कार्यक्रम या पाठ्यचर्या में एकीकृत विषयवस्तु (थीम) तथा परियोजना एक मुख्य भाग है। यह योजना उचित प्रकार से विकसित की जानी चाहिए ताकि यह बच्चों में उनके चारों ओर के वातावरण, विभिन्न संप्रत्ययों के बीच अर्थपूर्ण संबंधों को समझ सके। प्री-स्कूल पाठ्यचर्या लचीली तथा बच्चों की ज़रूरतों के अनुकूल होनी चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाए कि विषयवस्तु (थीम) पर आधारित ईसीसीई पाठ्यचर्या की रचना देश की विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाई जाए। दैनिक/साप्ताहिक/मासिक विषयवस्तु (थीम) पर आधारित कार्यक्रम सीखने के अनुभवों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाने चाहिए जो विकास के सभी पहलुओं तथा आयु एवं विकास के उपयुक्त हों। विभिन्न पहलुओं और संप्रत्ययों के लिए गतिविधियों की उद्देश्यपूर्ण योजना होनी चाहिए जो बच्चे को सक्रिय रूप से अधिगम के अनुभवों में व्यस्त रख सकें। यह प्रारंभिक अधिगम को मजबूत बनाने में सहायक है तथा भविष्य के लिए सीखने की नींव तैयार करती है।

12.5.1 विषयवस्तु (थीम) पर आधारित योजना के चरण

(क) विषयवस्तु (थीम) को पहचानना

पहला चरण है विषयवस्तु (थीम) तथा उसके उपविषयों (उप थीम) को पहचानना। इस चरण में निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

- विषयवस्तु (थीम) से संबंधित इस क्रियाकलाप में भाग लेने के परिणामस्वरूप शिक्षक बच्चों से क्या सीखने की आशा करता है?
- क्या यह विषयवस्तु (थीम) आयु तथा विकास के अनुरूप है?
- क्या बच्चों को विषयवस्तु (थीम) तथा इसकी पृष्ठभूमि के बारे में कोई समझ अथवा जानकारी है?

(ख) विभिन्न विषयवस्तुओं के लिए, गतिविधियों, विचारों और अनुभवों का सृजन

दूसरा चरण प्रत्येक विषयवस्तु (थीम) की गतिविधि के लिए दिमाग लगाने एवं विचारों को

शामिल करता है। योजना में बच्चों के विचारों को शामिल करना प्राय: शिक्षक की मदद करता है। विद्यालयों या पार्कों में खेलते हुए बच्चों को देखते समय शिक्षक के मन में इस प्रकार के सहज और स्वाभाविक विचार पैदा होते हैं। प्रश्नों पर विचार करें जैसे :

- मैं इस गतिविधि का चुनाव क्यों कर रहा/रही हूँ?
- क्या चुनी गई सभी गतिविधियाँ आयु और विकास के उपयुक्त हैं?
- क्या सभी गतिविधियाँ अर्थपूर्ण और प्रासंगिक हैं?
- क्या गतिविधियाँ सभी बच्चों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं?
- क्या चयनित गतिविधियाँ एवं खेल, स्थान तथा प्रसंग के अनुरूप हैं?

(ग) 'थीम वेब' की योजना

दिए गए वेब के नमूने को देखें। इस वेब में थीम पर आधारित होने के बावजूद भी सभी पहलुओं पर बल दिया गया है। चुनी गयी थीम है 'जानवर', अब शिक्षक को तय करना है कि बच्चों को विषयवस्तु से संबंधित खोज एवं अन्वेषण के अवसर प्रदान करने के लिए उसे किन गतिविधियों को शामिल करना है। गतिविधि क्षेत्र में विषयवस्तु (थीम) से संबंधित विशिष्ट गतिविधियाँ एवं सीखने की सामग्री का होना आवश्यक है। थीम वेब का उद्देश्य किसी विषय के लिए विचारों को ढूँढ़ना या सोचना है। अब हम वेब-I को देखें तो यह विकास के विभिन्न आयामों को दिखाता है। अब कोई भी एक थीम सोचें और उससे संबंधित गतिविधियाँ और अनुभवों के बारे में विचार करें। वेब-II में भाषायी, स्थूल-गत्यात्मक, सूक्ष्म-गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, संवेदी तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास के लिए गतिविधियाँ हैं।

चित्र 12.1 : वेब-1 - एक संतुलित ईसीसीई कार्यक्रम

टिप्पणी

(घ) थीम वेब को बनाने के बाद आप दैनिक/साप्ताहिक योजना में बच्चों की आयु, रुचि और स्तर के अनुसार गतिविधियाँ और अनुभवों को शामिल कर सकते हैं। आप आगे पढ़ेंगे कि 3-6 वर्ष के बच्चों के लिए दीर्घावधि थीम आधारित योजना-मासिक योजना, साप्ताहिक योजना और दैनिक योजना कैसे बना सकते हैं।

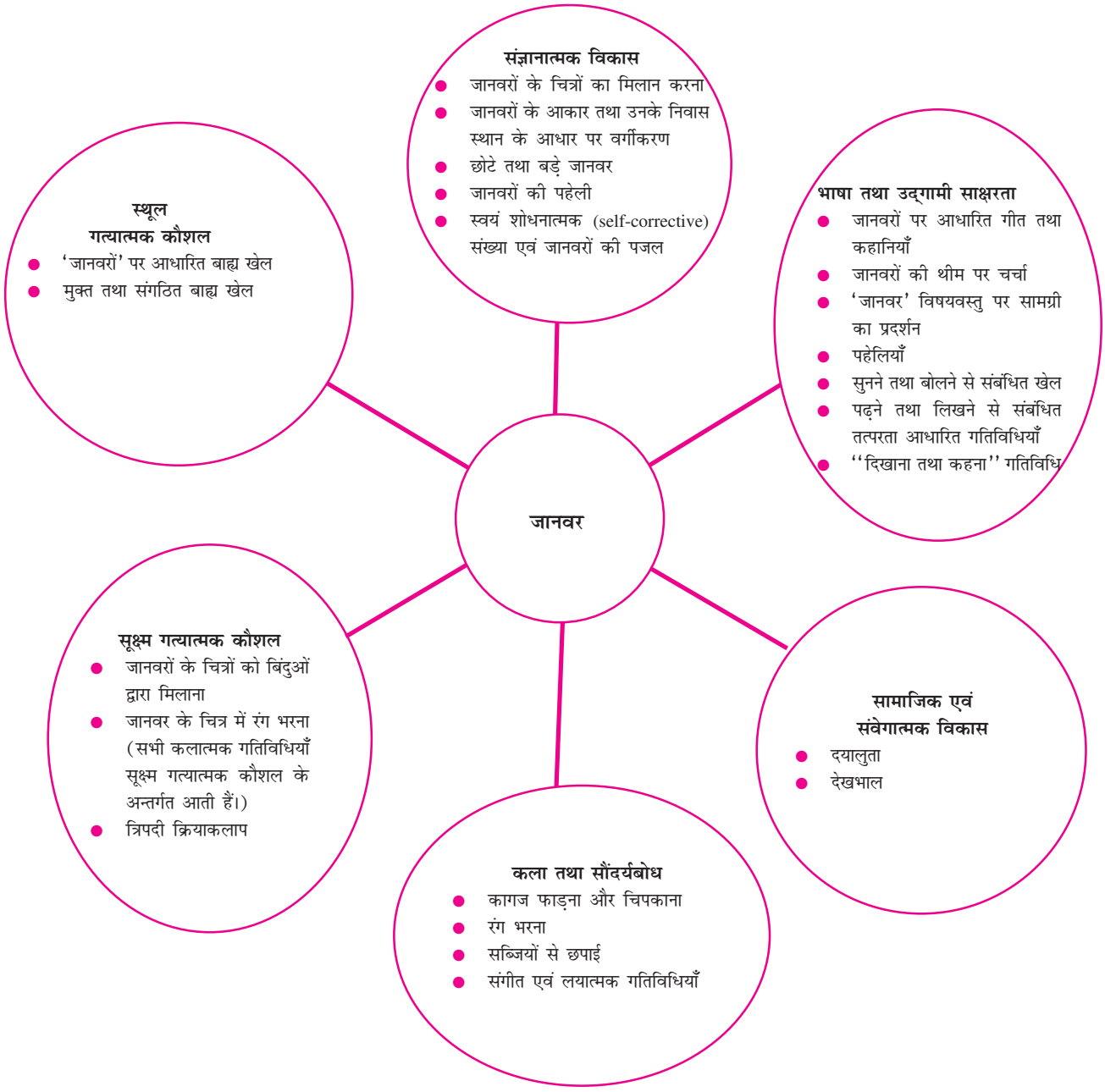

चित्र 12.2 : थीम 'जानवर' पर आधारित वेब योजना

टिप्पणी

नोट : शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वे साप्ताहिक/मासिक विषयवस्तु से संबंधित क्रियाकलाप तथा शिक्षण सामग्री कक्षा के 'क्रियाकलाप क्षेत्र' में उपलब्ध कराएँ।

आप स्थानीय त्योहारों तथा उत्सवों के आयोजन द्वारा भी अपनी थीम को स्थानीय दृष्टि से प्रासंगिक बना सकते हैं।

3-6 वर्ष के बच्चों के लिए-पूरे वर्ष की थीम पर आधारित योजना (एक नमूना)

थीम	गतिविधियाँ	सामग्री
विद्यालय के वातावरण के साथ अनुकूलन **'मैं'** समारोह: बैसाखी (त्योहार)	• स्वतंत्र और निर्देशित बातचीत-स्वयं के बारे में जागरूक होने के लिए (अपना नाम, माता-पिता का नाम तथा भाई बहन का नाम) घर का पता, विद्यालय तथा शिक्षक का नाम • शरीर के अंगों के नाम तथा उनके कार्य, साफ़-सफ़ाई (अच्छी आदतें) • कहानियाँ एवं कविताएँ • सरल निर्देशों का पालन करना • मिलान करना • रंगों का संप्रत्यय • शारीरिक तथा गत्यात्मक गतिविधियाँ • रचनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास गतिविधियाँ	चित्रों के चार्ट, कार्ड (कहानी, स्पर्श तथा अलग कार्ड को छाँटना), कठपुतलियाँ, रंगों के डोमिनो, कला सामग्री, गेंद, गुड़िया, मोती, ब्लॉक्स, पहेलियाँ, छूने के अनुभव वाला थैला, विभिन्न आवाज़ वाले डिब्बे, वर्गीकरण कार्ड आदि। उत्सवों के आयोजन के लिए विशेष परिधान/पोशाक
मैं, मेरा परिवार, (पुनरावृत्ति), मेरा आस-पड़ोस	• मेरे परिवार पर स्वतंत्र एवं निर्देशित वार्तालाप, संबंधों को समझना, दूसरे बच्चों के भावों तथा अधिकारों का आदर करना, अपने से बड़ों की बात सुनकर एवं उनके निर्देशों को मानते हुए सम्मान करना, विशेष आवश्यकता वाले बुजुर्ग तथा जरूरतमंद लोगों के प्रति समानुभूति तथा देखभाल, पौधों, जानवरों तथा अन्य जीवों के प्रति देखभाल • कहानियाँ तथा कविताएँ • इन्द्रियों का विकास (खुरदरा-चिकना, गंध) • पहचानिए तथा मिलान कीजिए • आकार का संप्रत्यय (बड़ा-छोटा) • समय का संप्रत्यय (पहले-बाद में) • पैटर्न बनाना (3-4 वस्तुएँ) • शारीरिक तथा गत्यात्मक विकास से संबंधित गतिविधियाँ • रचनात्मक तथा सामाजिक - संवेगात्मक विकास से संबंधित गतिविधियाँ	साधारण एक पंक्ति की पहेली, कार्ड (चित्र-पठन, स्पर्श, मिलान, वर्गीकरण, क्रमबद्ध तथा पैटर्न बनाना), विभिन्न गंध की सामग्री, डोमिनो, विभिन्न आकार की समान वस्तुएँ, अंदर खेली जाने वाली स्वतंत्र खेल- सामग्री, बाहर खेले जाने वाले खेल उपकरण, सृजनात्मक कला के लिए सामग्री
जानवर (जंगली, पालतू, घरेलू; सामान्य पक्षी और कीट; जलीय जंतु)	• जंगली, घरेलू और पालतू जानवरों, सामान्य पक्षी और कीट तथा जलीय जीव- जंतु पर स्वतंत्र एवं निर्देशित बातचीत; जानवरों के बच्चे, उनके निवास स्थान, भोजन, लाभ, उनके देखभाल व पोषण के बारे में ज्ञान देने के लिए गतिविधियों का आयोजन • रंगों का संप्रत्यय (प्राथमिक रंग)	रंग तथा आकार के डोमिनो, कार्ड (चित्र पठन, मिलान चित्र), कहानियाँ तथा कविताएँ, देशभक्ति गीत, स्टिक पपेट (सूरज, चांद

	• आकार का संप्रत्यय (मूलभूत आकार) • पैटर्न/नमूने बनाना • मिलान, पहचान, नाम देना तथा वर्गीकरण • शारीरिक तथा गत्यात्मक गतिविधियाँ • सृजनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ • रोल प्ले, अभिनय, कठपुतली का खेल, कहानियाँ एवं गीत, संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ	तथा सितारे), गुड़ियाँ, मोती, ब्लॉकस; पजल, सृजनात्मक कला कार्य के लिए सामग्री, क्ले
परिवहन (सड़क, वायु, पानी) **समारोह: शिक्षक दिवस**	• सड़क, वायु और पानी के परिवहन, परिवहन से संबंधित सुरक्षा नियम और शिक्षक दिवस से संबंधित स्वतंत्र तथा निर्देशित वार्तालाप • सामान्य निर्देशों का अनुसरण • ध्वनि विभेदीकरण, विषयवस्तु से संबंधित शब्द भंडार • बोलने के कौशल का विकास (दिखाओ और कहो) • संज्ञानात्मक कौशलों का विकास जैसे वर्गीकरण, क्रमबद्ध चिंतन, स्थान का संप्रत्य (अंदर-बाहर) क्रम में लगाना, मिलान करना, पहचानना तथा नाम देना • रोल प्ले, कहानियाँ तथा गीत-कविताएँ • विभिन्न प्रकार के परिवहन की पहचान (वायु, जल और सड़क), परिवहन का नाम बताना, पहचानकर उनकी आवाज़ों का अनुकरण करना, अवलोकन तथा स्मरण, वर्गीकरण, क्या सबसे अलग है, समय संप्रत्यय (पहले और बाद में) • शारीरिक एवं गत्यात्मक गतिविधियाँ, सृजनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ	पिक्चर चार्ट, कार्ड (चित्र पठन, मिलान करना, वर्गीकरण, क्या गायब है?, क्रमबद्ध चिंतन) पहेलियाँ, खिलौने, चित्र चार्ट, अन्दर खेले जाने वाले खेल उपकरण, बाहर खेले जाने वाले खेल उपकरण, कला/क्राफ्ट सामग्री, क्ले सामग्री
सब्जियाँ, फल, पादप जीवन **समारोह:** • **दशहरा (त्योहार)** • **गांधी जयंती** • **दीपावली (त्योहार)**	• सब्जियों, फलों, पौधे के जीवन, त्योहार तथा गांधी जयंती पर स्वतंत्र एवं निर्देशित वार्तालाप • सामान्य फलों व सब्जियों को पहचानना व उनके नाम बताना, सब्जियों व फलों में अंतर, सब्जी व फल के लिए सही शब्द का उपयोग, उनको धोना, फल व सब्जियाँ खाने के लाभ, उनके रंग, आकार, बनावट एवं स्वाद। छीलकर खाने वाले तथा बिना छीले खाने वाले फलों और सब्जियों को पहचानना, भूमि के ऊपर तथा अंदर उगने वाली फल एवं सब्जियाँ, पेड़ों, घास, फूल और लताओं की पहचान। • सामान्य संज्ञानात्मक कौशल जैसे मिलान, समस्या समाधान तथा तर्कशक्ति • स्थान का संप्रत्यय (ऊपर-नीचे), लंबाई (लंबा-छोटा), समय (दिन, रात, सुबह, दोपहर तथा शाम) तथा वर्गीकरण • छाँटना (चावल और दाल को इक्ट्ठे मिलाकर), मोटाई का संप्रत्यय (मोटा-पतला)	चित्र के चार्ट, कार्ड (छाँटना, मिलाना, पूर्व-संख्या संप्रत्यय, भिन्न को छाँटना) अनाज को छाँटना, पज़ल, कला और क्राफ्ट सामग्री, दीपावली की सजावट के लिए, अंदर खेले जाने वाले मुक्त खेल उपकरण, बाहर खेले जाने वाले खेल उपकरण, कच्चे फल व सब्जियाँ, पौधे, अंकुरण के लिए पात्र
• **घर** • **शीत/शरद ऋतु** समारोह: क्रिसमस	• मनुष्य और जानवरों के लिए घर की ज़रूरत पर मुक्त तथा निर्देशित वार्तालाप, परिवार, घरों के प्रकार, घर के विभिन्न भाग, घर में इस्तेमाल होने वाली वस्तुएँ, शरद ऋतु, क्रिसमस • चिड़ियाघर की सैर तथा किसी निर्माणाधीन भवन की सैर	चित्र के चार्ट, मिलान चार्ट, क्रिसमस आयोजन के लिए क्राफ्ट सामग्री, कार्ड (पूर्व-संख्या संप्रत्यय, क्रमबद्ध चिंतन, मिलान), बाह्य

	• कहानियाँ, कविताएँ व गीत • बोलने के कौशल व शब्द भंडार में वृद्धि • दृश्य विवरण • मूलभूत संज्ञानात्मक कौशलों का विकास • आकार, स्थान (ऊपर-नीचे) तथा समय (पहले-बाद) का संप्रत्यय • स्थिति को पहचानना (आगे-पीछे), तापमान को पहचानना (गर्म-ठंडा), संबंध, वर्गीकरण तथा पैटर्न बनाना • छाँटना, पहचानना और नाम देना–सूरज, चन्द्रमा, तारे, आकाश, पानी, आदि • शारीरिक व गत्यात्मक विकास की गतिविधियाँ • सृजनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ	खेल उपकरण, अंदर खेले जाने वाले खेल उपकरण, पज़ल
पानी समारोह: • लोहड़ी (त्योहार) • मकर संक्रान्ति • पोंगल • ईद • गुरु-पर्व • गणतंत्र दिवस	• सजीवों के जीने के लिए पानी के महत्व, पानी के उपयोग, स्वच्छ पानी पीने की आवश्यकता, पानी के स्रोत, पानी के संरक्षण की जरूरत, इसके अपव्यय को रोकने पर मुक्त एवं निर्देशित चर्चा, लोहड़ी, मकर संक्रान्ति, पोंगल, गणतंत्र दिवस समारोह • प्रयोग, प्रदर्शन के द्वारा मूलभूत संज्ञानात्मक कौशलों का विकास: डूबना तथा तैरना, पानी में घुलनशील एवं अघुलनशील वस्तुएँ, वाष्पीकरण, पानी की विशेषताएँ–(रंग व स्वाद, स्वाद में परिवर्तन अगर उसमें नींबू, चीनी, नमक मिलाया जाए) • कहानियाँ, कविताएँ तथा गीत • शारीरिक तथा गत्यात्मक विकास की गतिविधियाँ • सृजनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ	टब, बोतल के ढक्कन, पिक्चर चार्ट, रंग, ब्रुश, ग्लास, मोती, कला एवं क्राफ्ट सामग्री, क्ले, नमक, चीनी, रेत, पत्तियाँ, तिनके, मारबल, पंख, नाव बनाने के लिए, ओगेमी पेपर
समुदाय में सहयोग करने वाले लोग समारोह : बसंत पंचमी	• डॉक्टर, नर्स, दर्जी, मोची, डाकिया, पुलिस अधिकारी, ड्राइवर, दूध वाला, माली, नाई, बर्तन बनाने वाला, शिक्षक, धोबी, कुली आदि की ज़रूरत एवं महत्व पर मुक्त एवं निर्देशित बातचीत। • समुदाय में सहयोग करने वाले लोगों को पूर्व-विद्यालय में आमंत्रित करना तथा उनका बच्चों से बातचीत करना। • सुनने तथा बोलने के कौशलों का विकास • कहानियाँ तथा कविताएँ • सामाजिक वातावरण से संबंधित शब्द भंडार, चित्र पठन • इंद्रियों का विकास • समुदाय में सहयोगी वर्ग की गतिविधियों का अवलोकन, स्मरण तथा पुन:स्मरण करना। • समुदाय के सहायक लोगों के उपकरणों का मिलान, गायब खेल, क्रमबद्धता, वर्गीकरण (समय के संप्रत्यय पर आधारित), पैटर्न बनाना (3-4 वस्तुओं से)। • समय का संप्रत्यय (दोहराना), पूर्व-संख्या अवधारणा (चौड़ा तथा संकरा), संख्या (पूर्ण एवं अंश) का संबंध • शारीरिक व गत्यात्मक विकास गतिविधियाँ • सृजनात्मक तथा सामाजिक-संवेगात्मक विकास गतिविधियाँ	संवाद चार्ट, समुदाय में सहयोग करने वाले लोगों के चित्र, मिलान कार्ड, उपकरण, डॉक्टर सेट, अंदर खेले जाने वाले खेल उपकरण, बाह्य खेले जाने वाले खेल उपकरण, गुड़ियाँ, ब्लॉक बनाना, मोती, पज़ल

पिछली विषय वस्तुओं को दोहराना समारोह ● होली (त्योहार)	● मुक्त और निर्देशित वार्तालाप- होली के समबन्ध में ● कहानियाँ और कविताएँ- विषयवस्तु से संबंधित ● भाषायी कौशलों का विकास- (भावों की स्पष्टता व प्रवाह), श्रवण कौशल (समझ के साथ सुनना), लिखने के कौशल (गोल, तिकोन तथा चोरस ड्रा करना), पठन कौशल (चित्र पठन) ● अपने आस-पास हवा को महसूस करना, हाथों में हवा को तेजी से बाहर निकालना, हवा हल्की चीजों को वातावरण में उड़ाती है। ● मिलान करना, पहचान करना, तथा नाम देना- रंग, आकृति, बड़ा, छोटा, कम, ज्यादा, लंबा, छोटा, मोटा, पतला, चौड़ा, संकरा, दूर, पास, स्थिति को पहचानना- अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, ● गायब एवं स्मृति खेल, क्रमबद्धता, वर्गीकरण, समय तथा संख्या का संप्रत्यय, पैटर्न बनाना ● शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास की गतिविधियाँ ● सृजनात्मक तथा सामाजिक विकास की गतिविधियाँ	रंग, गुब्बारे, चित्र पठन कार्ड, पिचकारी, कार्ड (मिलान, आवृति, पूर्व-संख्या संप्रत्यय, संख्या, छाँटना, क्रमबद्ध करना, डोमिनों, बाह्य खेले जाने वाले खेल उपकरण, अन्दर खेले जाने वाली खेल सामग्री तथा ब्लॉक बनाना

नोट : त्योहार तथा अन्य उत्सवों के अवसर पर सम्बन्धित त्योहार के अनुरूप वार्तालाप का विषय चुना जाना चाहिए। प्री-स्कूल में सभी त्योहार मनाए जाने चाहिए।

नमूना - दैनिक योजना (4 घंटे)

अवधि		गतिविधियाँ
9:00 बजे	9:30 बजे	स्वागत
		व्यायाम स्वास्थ्य/स्वच्छता निरीक्षण प्रार्थना (कविताएँ, गीत और बच्चों के साथ वार्तालाप)
9:30 बजे	10:00 बजे	कक्षा में जाना, आराम से बैठना, अनौपचारिक उपस्थिति (आज कौन नहीं आया? क्यों? क्या कारण हो सकता है?) विषय वस्तु पर आधारित भाषायी विकास की गतिविधियाँ (मुक्त और निर्देशित वार्तालाप)
10:00 बजे	10:30 बजे	बाहर खेले जाने वाली गतिविधियाँ, झूले, फिसल पट्टी, रेत और पानी के खेल, पहिए वाले खिलौने, तिपहिया साइकिल, आदि।
10:30 बजे	11:00 बजे	हाथ धोना, अल्पाहार का समय
11:00 बजे	11:30 बजे	विश्राम का समय, कविताएँ, गीत, कहानियाँ आदि टेपरिकार्डर और म्यूजिक सिस्टम पर सुनना
11:30 बजे	12:00 बजे	विषयवस्तु पर आधारित संज्ञानात्मक विकास की गतिविधियाँ (विषयवस्तु पर संरचित और व्यवस्थित वार्तालाप)
12:00 बजे	12:30 बजे	अंदर खेले जाने वाले छोटे समूह के मुक्त खेल, ब्लॉक, गुड़ियाँ, पज़ल, सृजानात्मक उपकरण आदि
12:30 बजे	12:50 बजे	सृजनात्मक गतिविधियाँ
12:50 बजे	1:00 बजे	सामाजिक-संवेगात्मक विकास की गतिविधियाँ (कहानी, लयात्मक गतिविधियाँ, कविताएँ, अभिनयकरण और रोल प्ले)
1:00 बजे		छुट्टी/प्रस्थान

टिप्पणी

3⁺ से 6⁺ वर्ष के बच्चों के लिए गतिविधियों का आयोजन कैसे किया जाए।

उपविषय– पानी के सामान्य उपयोग

उद्देश्य– बच्चों को पानी के सामान्य उपयोग से अवगत कराना

अवधि– कम से कम दो दिन (छोटे बच्चों को बड़े बच्चों की अपेक्षा अधिक समय लग सकता है)

सामग्री– शिक्षक द्वारा निर्मित-कम कीमत या बिना कीमत के तैयार सामग्री

3 से 4 वर्ष के बच्चों के लिए गतिविधियाँ

स्वतंत्र वार्तालाप: शिक्षक दिन की शुरुआत बच्चों से पानी के सामान्य उपयोग के बारे में स्वतंत्र वार्तालाप के द्वारा कर सकता है। (नोट - सभी बच्चों को बोलने का अवसर दिया जाना चाहिए) मुक्त/ स्वतंत्र वार्तालाप से वह व्यवस्थित बातचीत की तरफ बढ़ेगा। यह बच्चों की पानी से संबंधित अधिक जानकारी और शब्द भंडार को विकसित करेगा। अगर ईसीसीई केंद्र में कोई पालतू जानवर है तो बच्चों को उन्हें पानी पिलाने के लिए प्रोत्साहित करें और **उसे पानी पीते हुए देखें।**

गीत और कविताएँ: भाषा विकास को प्रोत्साहन देने के लिए पानी के उपयोग से संबंधित गीत एवं कविताओं का गायन करें। संगीत एवं लयात्मक, सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध वाली विकासात्मक गतिविधियों का आयोजन करें।

बाहर खेली जाने वाली गतिविधियाँ: बच्चों को दिखाएँ– पौधों को पानी देता माली, फर्श साफ़ करते हुए कर्मचारी, शौचालय में पानी का इस्तेमाल, हाथ धोने के लिए पानी का इस्तेमाल, विद्यालय के रसोईघर में पानी का उपयोग, चाय बनाने में पानी का उपयोग।

पानी के खेल: बच्चों को पानी के टब में विभिन्न आकारों के पात्र से स्वतंत्र खेल के अवसर प्रदान करें। कुछ ऐसे मग या बर्तन भी लें जिनमें छेद हो और उनसे पानी गिरे।

क्षेत्रीय भ्रमण: बच्चों को आस-पास तालाब या झील देखने के लिए ले जाएँ।

4⁺ से 6⁺ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए गतिविधियाँ

पानी से संबंधित निर्देशित वार्तालाप: विषयवस्तु पर आधारित वार्तालाप के दौरान दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग, पानी के सामान्य उपयोग को दर्शाती हुई चित्र वाली किताब का प्रयोग।

रोल प्ले: बच्चों को पानी के उपयोग पर विचार करने को कहें। बच्चों को पानी के विभिन्न उपयोगों का अभिनय करने को कहें। प्रत्येक बच्चा एक उपयोग का अभिनय कर सकता है तथा दूसरें बच्चे बताएँगे कि वह क्या कर रहा है।

बच्चों का ध्यान चार्ट में प्रदर्शित पानी के उपयोग पर दिलाएँ।

सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल: बच्चे चित्रों में रंग भर सकते हैं। पानी के सामान्य उपयोग को दिखाते हुए स्वतंत्र रूप से कला चित्रण भी कर सकते हैं।

टिप्पणी

बच्चे पौधों को पानी दे सकते हैं और उन्हें दिखाया जा सकता है कि अगर पौधों को पानी न दिया जाए तो वे पीले पड़ कर सूख जाएँगे। शिक्षक अपने निर्देशन में बच्चों को अपने हाथ तथा चम्मच धोने को कहें।

बच्चे पानी के किसी गड्ढे अथवा पोखर में कागज़ की नाव बनाकर तैरा सकते हैं। इस क्रिया को बच्चे अंदर कक्षा या गतिविधि क्षेत्र में भी कर सकते हैं।

बच्चों को घर में माता-पिता एवं अन्य सदस्यों द्वारा पानी के उपयोग को देखने को कहें और अगले दिन इस विषय पर चर्चा करें।

शिक्षक सामान्य प्रयोग जैसे डूबना एवं तैरना, पानी में घुलनशील एवं अघुलनशील सामग्री, सूरज की उपस्थिति में गीले कपड़ों का सूखना, बर्फ का पिघलना आदि करा सकते हैं।

गतिविधि 12.1

प्री-स्कूल के लिए किसी भी थीम पर आधारित चार घण्टे की साप्ताहिक योजना का नमूना बनाएँ।

पाठगत प्रश्न 12.3

निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं अथवा असत्य, लिखिए–

(क) योजना मुख्यत: पाँच समय मापक्रम में आयोजित की जाती है।

(ख) दीर्घावधि योजना का अर्थ पूरे वर्ष के लिए योजना बनाना है।

(ग) लघु अवधि योजना बच्चों की रुचि व जरूरत को ध्यान में रखकर नहीं बनाई जा सकती।

(घ) विशेषकर थीम शिक्षण के लिए चित्रों, चार्ट एवं पोस्टर से युक्त कक्षा बच्चों को चुनौती, मनोरंजन तथा उत्साह प्रदान करती है।

(ङ) गतिविधि समय में यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा अपनी पसंद के अनुसार क्रियाकलापों का चयन कर सके।

(च) कक्षा को फिर से सुव्यवस्थित करने के लिए बच्चों और शिक्षकों को विशेषकर क्रियाकलाप के बाद 40-50 मिनट का समय साफ-सफाई के लिए रखना आवश्यक है।

गतिविधि 12.2

अपने पड़ोस के प्री-स्कूल में जाएं और वहाँ के दैनिक योजना कार्यक्रम का अध्ययन कर उस पर 100 शब्दों में प्रतिवेदन तैयार करें।

12.6 समावेशी प्रीस्कूल में विविधता एवं योजना की सराहना करना

सभी बच्चों की जरूरतें, रुचियाँ और योग्यताएँ अलग-अलग होती हैं। जहाँ वे भिन्न-भिन्न तरीके एवं गति से विकसित होते हैं वही उनकी विकास की प्रक्रिया एक-सी होती है। प्रत्येक बच्चा विकास के प्रत्येक चरण से होकर गुजरता है। ईसीसीई केंद्रों तथा कार्यक्रमों में मिश्रित संस्कृतियों के बच्चे आते हैं जैसे—विविध प्रकार की भाषा की पृष्ठभूमि वाले बच्चे, विभिन्न धर्मों के बच्चे, विविध सामाजिक-आर्थिक स्थितियों वाले, शहरों से, गाँवों से, विविध सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभव तथा खाने-संबंधी आदतें, आदि वाले बच्चे। लैंगिक विभिन्नता भी इसी प्रकार एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। जैसे कि ज्यादातर समाजों में लड़के एवं लड़कियों की परवरिश भिन्न-भिन्न तरीकों से की जाती है। लड़कों को ज्यादा सुविधा दी जाती है तथा लड़कियों की प्रायः उपेक्षा की जाती है। सभी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी भी स्तर पर किसी के भी साथ भेदभाव न हो।

भारतीय समाज में जाति, आर्थिक स्थिति एवं लिंग संबंध, सांस्कृतिक विभिन्नता तथा असमान आर्थिक विकास आदि बच्चों की विद्यालयी शिक्षा तक पहुँच और सहभागिता पर गहरा प्रभाव डालते हैं। सामाजिक-आर्थिक समूहों की विषमता, विद्यालय नामांकन में साफ दिखाई देती है। प्रत्येक बच्चा विद्यालय में विभिन्न आशा तथा अनुभवों के साथ प्रवेश करता है। अतः बच्चों को यह अहसास दिलाने कि ज़रूरत है कि उनकी भाषा, समुदाय तथा संस्कृति, हमारे लिए मूल्यवान है तथा उनकी विविध योग्यताएँ हमारे लिए स्वीकार्य हैं। उन्हें यह अहसास दिलाना भी जरूरी है कि उन सभी में योग्यता है और सीखने तथा ज्ञान एवं कौशल तक पहुँचने का अधिकार भी है।

एक ईसीसीई कार्यक्रम और समुदाय में विविधता से तात्पर्य बच्चों, स्टाफ़ तथा परिवारों में समानता तथा विभिन्नता से है। यह जाति, संस्कृति, योग्यता, लिंग तथा आयु को शामिल करता है। प्रारंभिक अधिगम तथा बच्चों की देखभाल के अनुभव के लिए आवश्यक है कि हम विविधता को पहचाने तथा उसका आदर करें। यह बच्चों के सामाजिक-संवेगात्मक हित तथा देखभाल, सहयोगात्मक रवैये तथा दूसरों के साथ बातचीत को बढ़ावा देती है। प्रत्येक बच्चे को अपनेपन की भावना तथा अपनी पहचान के प्रति सकरात्मक महसूस होनी चाहिए। अगर घर और विद्यालय का वातावरण अलग-अलग हो तो आपसी सहयोग द्वारा इस विविधता को सुलझाना बहुत महत्वपूर्ण है। यह निम्नलिखित प्रयासों से संभव है—

- परिवार तथा शिक्षकों के बीच मुक्त संवाद द्वारा
- एक-दूसरे की संस्कृति और अपेक्षाओं को सीखने के द्वारा
- प्रत्येक की अभिन्न संस्कृति और पहचान का आदर करने से

बच्चों को विविधता का आदर करने के लिए एक सकारात्मक परिवेश में समानताओं एवं विभिन्नताओं को खोजने के अवसर प्रदान करने चाहिए। अगर बच्चों तथा उनके परिवारों को

टिप्पणी

स्वीकृति तथा सहयोग मिलता है; तो उनका स्वाभिमान, आत्म-विश्वास तथा संवेगात्मक विकास मज़बूत होता है। अत: पाठ्यचर्या का नियोजन करते समय ध्यान रखना जरूरी है कि थीम :

- सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक तथा संवेदनशील हो।
- देखभाल का दृष्टिकोण तथा समानुभूति को पोषित करे।
- विविधता का आदर करे।
- लैंगिक मुद्दों का स्पष्टीकरण तथा समान अधिकारों को बढ़ावा दे।
- मूलभूत/बुनियादी जीवन के कौशल को सीखने के लिए सुनिश्चित करे।

सामान्यत: ईसीसीई पाठ्यचर्या विविधताओं को सभी समूहों के लिए संवेदनशीलता एवं समावेशन सुनिश्चिता के परिदृश्य के संबंध में स्पष्टीकरण नहीं करती है। यह तभी संभव है जब शिक्षक अपनी तैयारी में इन मुद्दों को समझें तथा विविधताओं के अनुसार फेरबदल कर एक समावेशी पाठ्यचर्या को अपनाए।

समावेशी पद्धति का उद्देश्य सभी को स्वीकारते हुए सबकी सहभागिता तथा अधिगम के लिए बाधाओं को दूर करना है। समावेशन के दौरान पहचान हुई है कि दिव्यांगता से संबंधित ज्यादातर चुनौतियाँ सामाजिक-सांस्कृतिक अभिरूचियों एवं मान्यताओं में अन्तर्निहित है। समावेशी का अर्थ एक से व्यवहार द्वारा सबको मुख्यधारा से जोड़ना नहीं बल्कि विविधताओं को पहचानकर उनके अनुसार कार्य करना है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अलग-अलग कर उन्हें दैनिक क्रियाकलापों से अलग नहीं किया जाना चाहिए। समावेशी प्रक्रिया शिक्षक को नियमित संदर्भ में व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता करने को कहती है।

समावेशी ईसीसीई केंद्र के लिए शिक्षक की रणनीतियाँ

- सामाजिक अन्तर्क्रियाओं को प्रोत्साहित करना
- बच्चे के परिवार से सुझाव और मदद
- बच्चे को दिए निर्देशों को सरल बनाना
- समूह गतिविधियों में सहभागिता के लिए सुधार करना
- बच्चों को कौशल सिखाने के लिए अतिरिक्त मदद प्रदान करना
- उपयुक्त रूप से प्रतिक्रिया देना
- सभी दैनिक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में सहभागिता के लिए सहायता प्रदान करना
- खेल सामग्री तथा उपकरणों के प्रयोग द्वारा उनकी मदद करना
- परिवेश को पुन: व्यवस्थित करना
- विशेषज्ञों से बच्चे के बारे में जानकारी साझा करते समय माता-पिता की अनुमति लेना

- खेल सामग्री और खिलौनों को अनुकूलित करना/बनाना
- प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता के अनुरूप उपकरण तथा उपस्थित फर्नीचर को रूपांतरित करना
- बच्चों के विभिन्न वातावरण/परिस्थितियों, संस्कृति, पारिवारिक स्तर एवं योग्यताओं के बारे में चर्चा के लिए समय और स्थान की रचना करना
- विभिन्न संस्कृतियों का परिचय कहानी व खेलों के माध्यम से देना।

पाठगत प्रश्न 12.4

कॉलम 'अ' का कॉलम ब से सही मिलान कीजिए–

कॉलम (अ)	कॉलम (ब)
(i) समावेशी शिक्षा	(क) मूलभूत जीवन कौशलों का सीखना सुनिश्चित करना
(ii) पदानुक्रम	(ख) आत्म-प्रत्यय, आत्मविश्वास तथा संवेगात्मक विकास
(iii) पाठ्यचर्या	(ग) जाति, संस्कृति, लिंग आदि
(iv) सकारात्मक वातावरण	(घ) समावेशी ईसीसीई केंद्र
(v) विविधता	(ङ) जाति, आर्थिक स्तर

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा–

- एक अच्छी ईसीसीई पाठ्यचर्या आयु उपयुक्त, सर्वांगीण विकास, खेल पर आधारित, एकीकृत, प्रायोगिक, लचीली और प्रासंगिक होती है।
- ईसीसीई कार्यक्रम में समग्र विकास के लिए गतिविधियाँ और अनुभव शामिल होने चाहिए।
- योजना के सिद्धांत: यह लचीले, संतुलित तथा एकीकृत होने चाहिए।
- प्रीस्कूल के कार्यक्रम नियोजन में शामिल हैं:
  - दीर्घावधि योजना – वार्षिक योजना
  - मध्यावधि योजना – मासिक योजना और सत्र अवधि योजना
  - लघु अवधि योजना – साप्ताहिक योजना और दैनिक योजना/दिनचर्या

टिप्पणी

- दैनिक योजना में प्रीस्कूल के पूरे दिन के कार्यक्रम को शामिल किया जाता है।
- साप्ताहिक योजना (विषयवस्तु पर आधारित) न केवल सीखने को आसान और रोचक बनाती है अपितु बच्चे को आधारभूत प्रत्ययों को अच्छे से समझने में मदद भी करती है।
- प्रारंभिक अधिगम और बच्चों की देखभाल के अनुभवों के लिए विविधता को पहचानना और उनका आदर करना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।
- बच्चों, परिवारों तथा स्टाफ के लिए विविधता तथा सभी को समाविष्ट करना बहुत ही लाभदायक है क्योंकि यह अपनेपन की भावना एवं समझ को मजबूत तथा विभिन्नताओं को स्वीकार करने में मदद करता है।

पाठान्त प्रश्न

1. दो गतिविधियाँ सुझाइए जिन्हें आप चार वर्ष के बच्चों के साथ उनके संज्ञानात्मक और सामाजिक-संवेगात्मक विकास के लिए प्रयोग करेंगे।
2. बच्चों में भाषा विकास के लिए कोई दो गतिविधियाँ को तैयार कीजिए।
3. एक प्रभावी ईसीसीई कार्यक्रम के मार्गदर्शक सिद्धान्त क्या हैं?
4. दैनिक कार्यक्रम के प्रमुख अवयवों की चर्चा करें।
5. अपनी पसंद की थीम के आधार पर 3 वर्ष के बच्चों को सिखाने के लिए दैनिक योजना कार्यक्रम तैयार करें।
6. अपनी पसंद की थीम के आधार पर 3 से 4 वर्ष तथा 5 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए (अलग-अलग) गतिविधियाँ लिखिए।
7. निम्नलिखित शब्दों से आप क्या समझते हैं:
   (i) समावेशी
   (ii) विविधता
   (iii) संदर्भिक/प्रासंगिक

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

(क) संदर्भिक/प्रासंगिक

(ख) बहुसांस्कृतिक

(ग) आयु, विकासात्मक

टिप्पणी

(घ) विकासोचित, अनुभवों

(ङ) पृष्ठभूमि

12.2

(क) समग्र

(ख) खोजबीन

(ग) आपस में जुड़े

(घ) विकास स्तर

(ङ) सुरक्षा

12.3

(क) असत्य

(ख) सत्य

(ग) असत्य

(घ) सत्य

(ङ) सत्य

(च) असत्य

12.4

(i) घ

(ii) ङ

(iii) क

(iv) ख

(v) ग

शब्दावली

- प्रासंगिकता–बच्चों के परिवेश/सन्दर्भ/क्षेत्र के अनुरूप।
- विकास के उपयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या–बच्चों के विकास और अधिगम के अनुरूप कार्यक्रम बनाना।

- विविधता संबंधी आवश्यकताएँ–बच्चों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएँ
- समावेश–सभी बच्चों को समान मानना; जहाँ पर बच्चों को उनकी क्षमताओं और कमजोरियों को न देखकर एक ही कक्षा में समान रूप से शिक्षा दी जाए।
- प्रभावशाली बनाना–विभिन्न प्रकार की सामग्री से गतिविधियों को बार-बार दोहराया जाए। संप्रत्यय को मजबूत बनाने के लिए अतिरिक्त सामग्री का प्रयोग किया जाए।
- प्रेरक वातावरण–रुचिकर, प्रेरक और उत्साहवर्द्धक वातावरण।

संदर्भ

- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Curriculum Framework for ECCE, 2013*. New Delhi: Government of India.
- Kaul, V. (2010). *Early Childhood Education Programme*. New Delhi: NCERT.
- Muralidharan, R. *Systems of Preschool Education in India*. Delhi: Maxwell Press.
- Muralidharan, R., & Banerjee, U. (1969). *A Guide for Nursery School Teachers*. New Delhi: NCERT.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *Position Paper of the National Focus Group on Early Childhood Education.* New Delhi: NCERT.
- Soni, R. & Sangai, S. (2014). *Every Child Matters*. New Delhi: NCERT.
- Soni, R. (2012). *Little Steps: A Manual for Pre-School Teachers*. New Delhi: NCERT.
- Soni, R. (2009). *Trainer's Handbook in Early Childhood Care and Education.* New Delhi: NCERT.
- Swaminathan, M. and Daniel, P. (2004). *Play Activities for Child Development: A Guide to Preschool Teachers.* New Delhi: National Book Trust.

WEB RESOURCES

- The Centre of Excellence for Early Childhood Development available at www.excellence-earlychildhood.